जामनगर रियासत के आदित्यराम व्यास का संगीतक्षेत्रे योगदान

कालुभाई जी. सरवैया
शोधछात्र–इतिहास भवन, सौ.युनि. राजकोट

भारतीय संगीतपराम्परा वेदकाल से चली आ रही है । सौराष्ट्र की भूमि के सल्तनतनकाल में नरसिंह महेता और मघुलकाल का तानारीरी से शुरू करके आज दिन–तक भक्ति साहित्य और संगीत परम्परा जकड़े हुए है, इसलिए संगीतपरम्परा दिखाई दे रही है ।[१] भारतीय संस्कृति में भगवान शिवको सर्व की प्रकार की विद्याओं और कलाओं का आदि का सर्जक माना गया है । जिसको परब्रह्म एकाक्षर का स्वरूप माना गया है । ॐ में से समस्त शब्दसमूह और भिन्न–भिन्न ध्वनियों उत्पन्न होती है शिव को नटराज कहा गया है। ब्रह्माण्ड के विराट रंगमंच पर ताण्डवनृत्य प्रथम प्रगट किया और बाद में संसार के सभी नृत्यों का आविष्कार हुआ है । पार्वतीने लास्य नृत्य का आरम्भ किया, नारी का कोमल भावि औश्र अंगभंगीओं को दर्शता हुआ नृत्य है, विश्व का सर्व प्रकार का ललित कलाऐ, नृत्यो, लास्यनृत्य में से प्रकट हुआ है । भगवान शिव सृष्टि का आदि वादक भी है इस में 'डमरु–डाक' अति सुन्दर सरल और मनमोहक वाद्य बनाय था । कवि कालिदास ने ठिक हि कहा है, "मनुष्य की रुचिओं भिन्न–भिन्न है, परन्तु नाट्य और नर्तन जैसी मोहक कलाओं तमाम कला के लोगों को आनन्द देता है ।"नाट्य भिन्न रुचिर्जन्स्य बहुधाप्यके समाराधनम् । भगवान सदाशिव आदि संगीतसर्जक आदि नर्तक तथा आदि वाहक है ।[२] संगीतकलाओं के क्षेत्र में आचार्य श्री सारंगदेव रचित ग्रंथ 'संगीत–रत्नाकर' संगीत के रत्नो का महासागर है ।

आदित्यराम व्यास का जन्म और बाचपन

नवानगर रियासत के जामजोधपूर तालुका के गाव में आदित्यरामजी के पिताहम दालावसनजी व्यास रहते थे । आदित्यरामजी के पिता वैकुण्ठरामजी जूनागढ रियासत में नवाब के आश्रय में रहते थे । आदित्यराम का जन्म नरसिंह महेता की नगरी में प्रश्नोरा नगर परिवारमें ई.स. १८१९ में जूनागढ में हुआ था । वैकुण्ठराम को हो पुत्रों मे बडे पुत्र हरिरामजी और छोटे पुत्र आदित्यरामजी बचपन से हि शरीर से तन्दुरस्त और शक्तिशाली थे, उसकी यादशक्ति और बुद्धि कौशल्य ज्यादा था । घर में कर्मकाण्ड परिवार और कथा–किर्तन, धार्मिक विधि–विधान का संस्कारों आदित्यराम को बचपन से मिला था, बचपन से हि संस्कृतभाषा तथा संस्कृत के श्लोको–मन्त्रों की शिक्षा देने की शरूआत की थी, आदित्यराम जन्मजात कवि, संगीत और विद्या के संस्कार मिल था, उसकी मुखमुद्रा आकर्षक और कण्ठ सुरीला था । बचपन से उसके पिताजी वैकुण्ठराराजीने संगीतकला को उत्तेजन दिया गया था, जब जब आदित्यरामजी की उमर बढती गई । तब तक उसके वंशपरम्परा की कृपा संगीतविद्या वय के साथ ही अभिवृद्धि हो गई । उसकी बुद्धि प्रतिभा और हाजर जवाबी कौशल्य के कारण उसको सभी स्थानों में मान–सन्मान मिलता था । किशोर आदित्यरामजी जूनागढ नवाब बहादुरखान के सामने गाना गाकर उसके पास से इनाम मिला था ।[३]

सारंगदेव लिखित संगीत रत्नाकर में दर्शाया गया है की संगीत ये गायन, वाहन और नृत्य का समन्वय है । प्राचीनयुग में सौराष्ट्र के द्वारका में कृष्णने बन्सरी का गान किया था बाण पुत्री उषाने सौराष्ट्र प्रदेश के द्वारका नगरी की गोपीयों को लास्यनृत्य शिखाएँ और गोपीयों ने सौराष्ट्र प्रदेशकी स्त्रीयों को लास्यनृत्य सिखाया था ।[४] ई.स. १९१० से १९५० तक में संगीतक्षेत्र में पूरा हिन्दुस्तान में सूर्य की तरह 'आफताबे–मौसीकी' (संगीत भास्कर) उस्ताद फैयाजखान गुजरात को गौरव

दिलाया और बडौदा को उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत को केन्द्र बनाया २० मी सदी की शरूआत में भारतीय संगीत क्षेत्रे नवजाकृति आई और संगीत का शिक्षाकार्य में विकास शरू हुआ ।[५]

आदित्यराम व्यास के साहित्य क्षेत्र प्रदान

आदित्यराम को संस्कृतभाषा साहित्य में ऋचि बढ ने लगी और पण्डित घनश्यामजी भट्ट के पास से संस्कृति के महाकाव्यों, नाटकों और भागवत आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया । प्राचीन भारतीय संगीतशास्त्र भी बहुत खेडा हुआ है । आदित्यरामजीने उसमें प्रवेश किया संगीत के प्रति उसकी सूझ और समज में बढोतरी हुई संगीत का ख्याल और गायन की तालीम उसने लखनौ निवासी उस्ताद गायक खान साहेब नन्नुमिया के पास से ली थी । गिरनारमे से आया कोई सिद्धयोगी की कृपा से आदित्यराम को मुदंगवादन की अदभूत कला सिद्ध हुई ।[६] सिद्धयोगी के आशीर्वाद से आदित्यराजी उन्नत्ति के शिखर पर चढ़ने लगे, जूनागढ के अधिपति नवाबश्री बहादुरखानजी के मोहल्ला में कोई कारणसर गये थे, उस समय आदित्यरामजी की उंमर आठ साल की थी, वो गुप्तशक्ति धाराने वाले बालक आदित्यराम अति आनन्द से बिना प्रयास पवन तरंग के साथ गायन का गानतरंग की लहेरीमे गा रहे थे । कोमल मधुर तथा संगीत के नियमानुसार लय से भरपूर राग सुनने के बाद उसने उस बालक को देखने की इच्छा हुई । नवाबसाहेब के हजूरी द्वारा वह बालक का पत्ता लगाकर आदित्यरामजी तथा बड़े भाई हरिरामजी दोनों नवाब के दरबार में आ कर संगीतविद्या का सम्पादन किया । ई.स.१८४० में जूनागढ रियासत की गादी पर नवाबश्री हामदखान आया उसने आदित्यरामजी के पास से मृदंगवाद्य सीखा उसीसे सिखने की पूर्ण आतुरता को देखकर आदित्यरामजीने नवाब को कहेते हे कि "आप मात्र पंदर दिन में मृदंगवाद्य अच्छी तरह से बाजायेगें और मृंदग पर बजाना सम पर त्रगडो आप ला सकते है । बराबर उस तरह ही हुआ, तब आदित्यरामजी की शिक्षा पदर्शति सर्वमान्य हो गई ई.स.१८४१ में जामनगर के गोस्वामि श्री वृजनाथजी महाराज के दर्शन के लिए जामनगर आये, वृजनाथजी उसका संगीत सुनकर अतिप्रसन्नन हुआ और महाराजने उसको जामनगरमें उसे रहने की आज्ञा दी थी ।[७]

पृष्टिमार्ग संगीतकारों मृदंग, तबला, झाझ, पखवाज, सितार, सरोदो, बंसरी और दुक्कड जैसे वाजिन्त्रों सहित बिलावल, काली, बिहावा, भैरव, भैरवी, सौरठ, केदार और मालकौश जैसा रागरागिणी में भक्तिरस से भरपूर भजनों और गान का बुलंद अवाज़ लगाकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया जाता था । पृष्टिमार्गो वल्लभ महाराज की हवेली संगीत का बड़ा पुरस्कर्ता था। उसके पुत्र गिरधरजीने ई.स.१८२७ में जामनगर में मन्दिर की स्थापना करके हवले संगीत की परम्परा शरू की थी, उसके बाद गोस्वामी वृजनाथलाल जामनगर में स्थिर हुऐ । ई.स.१८४१ में उसका परिचय २२ साल के युवा संगीतकार आदित्यराम के साथ होकर जीवन पलट गया । 'अष्टछापीय भक्तिसंगीत' का मिलन होकर सोने में सुंगन्ध एकरूप हो गई । वृजनाथलाल आश्रय देकर संगीत में बड़ा पण्डित बनाया ।[८] जामनगर के महाराज रणमलजी के दरबार में नृत्य करके पीछे मूडती मनीषा नामकी नर्तकी नृत्य और संगीतकला में बडी प्रविण थी, और रूप की रानी थी ! जामसाहेब तेना नर्तन, गायन तथा हावभाव से प्रभावित होकर जामसहेब और दरबार में उसने हिरामोती का हार और पारितोषिकों भेट किया, उस वक्त इस सभा में युवान आदित्यराम भी श्रोतावर्गमें बेठा था, तब नर्तकी मनीषा के गानों की सूक्ष्म दोषों को परख लिया और गायकों को जब शाही रथमें बेठकर जाती थी , तब चूपछाप उसके रथ में एक चिट्ठी रथमें फेंकी गायी के मनीषाए वे चिट्ठी पढ़ी उसमें लिखा था की तुम्हारी गायन में अशुद्ध स्वर उच्चार और तालसंग का दोष होता है, वह चिट्ठी पढ़कर खिन्न हो गई जामसाहेब के जन्मदिन उत्सव हुआ, उसमे गायिकाने सुमधुर गान किया, उसके बाद आदित्यराम सभा में खड़ा होकर जामसाहेब के पासे गायन गाने की रजामन्दी देने को कहा, जामसाहेब संगीत हि और आदित्यराम के हाथ में तम्बूर लेके मधुर कण्ठ शुद्ध सारंग राग प्रस्तूत किया, सभा में सबलोग स्तब्ध हो गये, और जामसाहेब भी खूश हो गए । और उसके मन मे समज आ गई की एक चिट्ठी में गायका की भूल बतानेवाला, महान संगीतकार रहे युवान होना ही चाहिए । इस प्रसंग के बाद जामसाहेब खूब मान–मरतबा के साथ आदित्यराम को दरबारी संगीतकार बनाया और जामनगर में हमेशा के लिए निवास के लिए आग्रह किया । ई.स.१८४६

में जामसाहेब कें द्वारा उसका विवाह समारम्भ किया और सभी खर्च उठाया था । ई.स.१८५२ में विभाजी गादी पर बेठें और आदित्यराम को वार्षिक ४ हज़ार कोरो देने की आज्ञा दी थी ।[९]

आदित्यरामजी की शिष्य परम्परा

व्रजनाथजी महाराज की कृपा से ई.स. १८४१ में आदित्यामजी जामनगर में निवास किया, और इन दोनों संगीतकारों के कारण जामनगर संगीतकारों का तीर्थ स्थान बन गया था । व्रजनाथजी, लाल महाराज और आदित्यरामजी इन तीनों कि त्रिपुटी जहाँ भी मिलती वहाँ संगीत कि सरित बहने लगती थी ।

सौराष्ट्र में प्रथम संगीत विद्यालय स्थापने का यश आदित्यरामजी को जाता है । जामनगर के महाराज विभाजी ने उदार आश्रम, योगदान और अनुमति से संगीत विद्यालय स्थापित किया था । आदित्यरामजी की संगीत की प्रसिद्धि इतनी प्रख्यात होने लगी कि जामनगर–ध्रोल–वढवाण, ध्रांगध्रा अनेक स्थानों पर राजकुमारों को संगीत कि शिक्षा प्रदान की थी ।

आदित्यरामजीने अपने गायन–वादन की पद्धति से संगीत क्षेत्र में अनेक शिष्य बने । सौराष्ट्र में एक ही संगीत 'घराना' अर्थात् 'आदित्यरामजी घराना' की स्थापना हुई । इस शिष्य परम्परा में कई शिष्य शास्त्रीय गायन, पखावज वादन आदि कौशल्य प्राप्त किया था । आदित्यरामजी के प्रमुख शिष्य में अपने दोनों पुत्र पं. केशवालजी और पं. लक्ष्मीदासजी है,। और इस परम्परा को आगे बढ़ाने में जिनका योग्य दान है । जिसमें , केशवलाल व्यास, लक्ष्मीदास व्यास, मुलजी व्यास, मोरारजी खत्री, बलरामजी, द्वारकानाथ गोस्वामी, मयाराम, शामजी, जगु कंसारा, लीलाधर गुगली, धनजी नागर, जुठा रावल, कानजी भट्ट, जटाशंकर शुकल, जयकृष्ण और गोकलजी गीरनारां का समावेश होता है ।[१०]

श्री आदित्यरामजी के गायन शैली

पण्डित आदित्यनाथजीने सांगीतिक व्यक्तित्व का विकास किया और उत्तरभारतीय शास्त्रीय संगीत की गायन शैलीओं में बडे हिस्सो में उसने काम किया था । इसका उल्लेख उसने उसके ग्रन्थ 'संगीतादित्य' में समाविष्ट साहित्य में दिया है । इस ग्रन्थ में आदित्यरामजीने स्वरचरित धृपद–घमार–ख्याल–त्रिवट–तराना– झपताल आदि निबन्ध गायन शैलीओं की रचनाओं का वर्णन किया है, आदित्यरामजी वृजनाथजी के साथे कलकत्ता, द्वारका, दिल्ली, पूना, नासिक, सनारा, काशी, गोकुल, मथुरा, जोधपूर, बीकानेर, कोटा, बुंदी, उदेपूर और ग्वालियर आदि स्थानों में साथ घुमाकर भारत का संगीतकारीका परिचय कराया था । आदित्यराम की भक्ति दुन्यवी काव्यों को उसकी अपने अन्दाज से गान का पायन किया की उसकी नामना भारत का एक समर्थ कव्यैया में हो गई ।[११]

प्राचीन प्रबन्ध गायनशैली

शास्त्रीय संगीत का शास्त्रों में निबद्ध और अनिबद्ध गायन जैसा हो भेद पाड़ा गया है, 'अनिबद्ध' में तालमुख अलावा जैसा गायन और ताल का बन्धनयुक्त हो उसे 'निबद्ध' गायन कहा गया है, स्वर, ताल, पद उन तीनों तत्त्वों का बन्धन 'निबद्ध' गाना आवश्यक है शास्त्रों में निबद्ध गान के तीन नाम मिलते है, जो क्रमशः, प्रबंध–वस्तु और रूपक है । जिसमें 'प्रबन्ध–सर्वाधिक प्रचलित नाम है, प्रबंध शब्द देशी गीतों में पर्यायरूप में प्रर्युक्त होता शब्द है, इसमें से असंख्य प्रकार पड़ता है, जिसमें मुख्य छ अंगों इस तरह है ।

१)स्वरः सा..रे..ग..म...आदि संगीत का स्वर है, उस गैर संगीत की रचना नहीं हो शक्ति इसलिए वह पहला अंग है ।

२)बिरुद : इस अंग का प्रयोग नाटकों में होता है । पात्रों का गुण–गान किया जाता है, इस अंगमें गीतों को नायक का नाम, कुल आदि वर्णन को 'बिरुद' कहते है ।

३) पद : शब्दों को पद कहता जाता है, दूसरे शब्दों में उसको नायक का शौर्य और गुणों का वर्णन किया जाता उसे 'पद' कहते है ।

४) तेनक : प्रबन्ध के इस अंग में 'ॐ तत् सत् ', 'तत्त्वमसि...' 'तेन-तेन' आदि शुभ और मंगल वाक्यों को प्रयोगक होता है ।

५)पाट : ताल के कोल को जब रुद्रविणा, शङ्ख तथा अन्य प्रकारकों ढ़ोल की ध्वनि के उच्चारण किया जाता है उसे 'पाट' कहते है ।

६) ताल : 'समय' का मापन को ताल कहते है, इसलिए प्रत्येक प्रबन्ध का एक अंग ताल कहा जाता है ।

धातु की दृष्टि से प्रबन्ध के तीन प्रकार है ।

- चर्तुधातु प्रबन्ध में - उदगाह, ध्रुव, मेलापक और आभोग ।
- त्रिधातु प्रबन्ध में - उदगाह, ध्रुव और आभोग
- द्विधातु प्रबन्ध में - उदगाह, और ध्रुव

वर्तमान समय में शस्त्रों में वर्णित अनेक प्रबन्धों का अस्तित्व वर्तमान भाषाओं में रचानाओं में उनके पदों में मिलती है । उसमें मुख्य प्रबन्ध 'पद' और 'विरुद' प्रमुख स्थान दिया गया है, किन्तु इस दो अंगों से प्रबन्धों की संख्या अधिक मानी गई है जैसे कि, ध्रुपद, ख्याल, टप्पा, तराना, त्रिवट, चतरंग, सरगम गीत, रागमाला, लक्षण गीत, ठुमरी, होरी-धमार, दादरा, सादरा आदि रागों का वर्णन किया गया है ।

१) राग कदम्ब : जी प्रबन्ध में अनेक रागों को प्रयोग होता है उसे राग कदम्ब कहा गया है ।

२) पंचतालेश्वर प्रबन्ध : इस प्रबन्ध में पंच तालो का प्रयोग किया गया है शास्त्रों में इस प्रबन्ध को अभिक्रम प्रबन्ध अन्तर्गत स्थान दिया गया है ।

३) मातृका प्रबन्ध : इस प्रबन्ध में अकारादि क्रम है । गीत की पंक्तियों का आरम्भ में स्वरों और व्यञ्जनों और स्वरों का क्रम गाया जाता है । उ.दा.

ओ अंकार आदि में जाना । लिखि और मिटे ताहि न माना ।।
ओ अंकार लिखे जो कोई । सोइ लखि मेहजा न होई ।।

४) कैवाड प्रबन्ध : इस प्रबन्ध में पखावज, तबला, मृदंग आदि वाद्यों का वर्णन गेय रचनाओं में है, उस वर्तमान समय में 'त्रिवट' कहता है ।

५)द्विपदी प्रबन्ध : इस प्रबन्ध में 'रहाड' (टीप) बाद, क्रमशः और २ अंक दो पदों का सुचक है 'संगीतराज' ग्रन्थ में द्विपदी प्रबन्ध का अतिक्रम प्रबन्धों की श्रेणी में स्थान दिया गया है ।

६)द्विपक प्रबन्ध : इस प्रबन्ध में हिन्दी में 'दोहा' और संस्कृत में 'श्लोक' के अनुष्टुप छन्द के नाम पर प्रचलित है ।

अनेक संगीतज्ञोंने निबन्ध गान का तिन प्रकार बताया है ।

प्रबन्ध और वस्तु

प्रबन्ध और वस्तु जब कोई रचना का सर्जन नाटकीय तत्त्वों पर ध्यान दिया जाता है उसे रूपक कहा गया है । वस्तु एक एसी सम्पूर्ण रचना है जो अंग और धातु का मिश्रण से बना है । प्रबन्धों में रचना के भागों पर खास ध्यान और महत्त्व दिया गया है, अतः इस अंगों की सर्जीत सम्पूर्ण रचनाओं को 'वस्तु' की संज्ञा दी गई है ।[१२]

स्वर के नाम

नामसंक्षिप्त नाममूल स्थानअन्त स्थान

१. खरजसादन्त कण्ठ

२. रिषभरि मूर्धतालु

३. गन्धारगकण्ठकण्ठ

४. मध्यम मओष्ट नासिका कण्ठ

५. पञ्चम पओष्टकण्ठ

६. धैवत धदन्त कण्ठ

७. निषादनि दन्त नासिका तालु

छत्रीस प्रकार के राग रागनी के नाम और गाने की ऋत

रागरागणीकेनाम ऋतु

भैरवभैरवीगुर्जरीरामकलीटोडीवेराडीशरद

मीलकोषवाघेश्वरीककुभासोहनीखंभायचीगुनकलीशशीर

हींडोलवसन्तपच्चमललितबिलावलीदेशाक्षिवसन्त

दीपक धनाश्रीनाटजेतश्रीपलासीकामोदीग्रीष्म

श्रीगोडीमालवीत्रीवणीपूर्वीटंकीकाहेमन्त

मेघ मल्लारीसोरठीसारंगबडहंसमधुमासवर्षा

इस प्रत्येक रागों की पाँच–पाँच स्त्रीयों मिली ३० रागीणी और ६ रागों मिल के कुल ३६ रूप हुए ।

ग्राम की समज

सा–री–ग–म–प–ध–नि–सा षड्ज ग्राम

सा–री–ग–म–प–धगाधार ग्राम

सा–री–ग–ममध्यम ग्राम

मूर्छा के २१ नाम

षडज ग्राममध्य ग्राम ग्रांधार ग्राम

१.उत्तर मंद्रा सौविरीनन्दा

२.रजनी हरिणाश्वाविशाला

३. उत्तरायनि कपोलनता सोमपी

४. सुद्ध षडजा शुद्ध मध्या विचित्रा

५. मत्सरी क्रांता मार्गीरोहीणी

६. अश्व क्रांता पौरवीसुखा

७. अभिऋता मन्दाकिनीअलापि

इस प्रकार आदित्यरामजी हिन्दी काव्योंकी भी रचना करते एसा कहना मे आया है । उनके उपदेशी कविता और सवैया भी उपलब्ध कृतियाँ है ।[१२]

सन्दर्भ

१. महेता डॉ. मकरन्द, "गुजरातना घडवैया" स्व विकास की प्रयोगशाला, ग्रन्थ–१, प्रथम आवृत्ति, ओक्टोम्बर–२००७, पृ.८६

२. सावलिया मनसुखलाल, 'भारत के महान संगीतकारों', प्रवीण प्रकाशन, राजकोट, प्रथम आवृत्ति, २००४, पृ.९९

३. ठाकर धीरुभाई, गुजराती विश्वकोश, पृ.८५४

४.जानी, डॉ. एस.वी. 'सौराष्ट्र का इतिहास', प्रथम आवृत्ति, ओक्टोम्बर–२००३, पृ.४२७

५. शास्त्र हरिप्रसाद गागाशंकर और परीख प्रवीणचन्द्र चिमनलाल, "गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास" ग्रन्थ–९, आजादी पहेले और बाद– भो.ज.विद्याभवन द्वितीय आवृत्ति–२०९१, पृ.३८१

६. सावणीया मनुसखलाल, "भारत का महान संगीतकारों" प्रवीण प्रकाशन, राजकोट, प्रथम आवृत्ति–२००४, पृ.१९२

७. रत्नु मावदानजी भीमजीभाई राजकवी, "श्री यदुवंश प्रसाशन और जामनगर का इतिहास" प्रथम आवृत्ति, इ.स.१९३५, तृतीयखण्ड–पृ.११२

८.महेता डॉ. मकरन्द, पूर्वोक्त ग्रन्थ, पृ.८७

९. ठाकर धीरभाई, गुजराती विश्वकोष, पृ.८५४

१०. पण्डिया अशोक कुमार, सौराष्ट्र के आदित्यरामजी घराना के उत्तरभारतीय शास्त्रीयसंगीत क्षेत्रे प्रदान–एक अध्ययन, (अप्रकाशित महाशोध निबन्ध), पृ. २२४–२२५

११. महेता डॉ. मकरन्द, पूर्वोक्तग्रन्थ, पृ.८७

१२. पण्डिया अशोक कुमार, सौराष्ट्र के आदित्यरामजी घराना के उत्तरभारतीय शास्त्रीयसंगीत क्षेत्रे प्रदान– एक अध्ययन, (अप्रकाशित महाशोध निबन्ध), पृ. २११–२१२

१३. रत्नु मावदानजी भीमजीभाई राजकवी, "श्री यदुवंश प्रसाशन और जामनगर का इतिहास" प्रथम आवृत्ति, इ.स.१९३५, तृतीयखण्ड– पृ.११४